काव्य संगीति

डॉ. राजवीर सिंह 'कमल'

मो.नं.- 9278448047

गीत-1

हिंदू राष्ट्र बनाएंगे ये अपने भारत देश में
फिर से सबको जीना होगा सामंती परिवेश में
यत्र तत्र सर्वत्र देव यहां ब्राह्मण ही कहलायेगा
मठाधीश बनकर वो ही मंदिर में शंख बजायेगा
फिर से सबको जीना होगा पाखण्डी परिवेश में।1

अब कोई शम्बूक ऋषि उपदेश नहीं दे पायेगा
फिर से कोई एकलव्य ना आगे बढ़ने पायेगा
गुरु घण्टाल द्रोण मिलेंगे भगवा धारी वेश में।2
मनमोहक और तरुण बालिका हर मंदिर में पायेंगी
रखैल देवदासी बन कर पंडो की भूख मिटायेंगी
गुंडे, चोर, लुटेरे होंगे सब संतों के वेश में।3

वही पुराने ढर्रे पर सब पुश्तैनी धंधे होंगे
न्याय दिलाने वाले सारे नयायधीश अंधे होंगे
जंगल राज बनेगा फिर से देखो अपने देश में।4

गाँव गली घर पगडंडी पर सामंती पहरा होगा
प्रजातन्त्र के अंग-अंग पर घाव बहुत गहरा होगा
फरयादी ही दोषी होंगे अब तो अपने देश में।5

जातिवाद का कहर भयंकर रोजी-रोटी खा जाएगा
चपरासी से हुकमरान तक सामंती ही पायेगा
मजलूम सभी मजबूर मिलेंगे भीख मंगेगे परिवेश में।6

मजलूमों की हर शिक्षा पर ये प्रतिबंध लगाएंगे
जाति सूचक शब्दों नफरत के बाग सजायेंगे
कदम-कदम पर अपमानों की झड़ी लगेगी देश में।7

सविंधान का भारत में अस्तित्व मिटाया जाएगा
हिंदू राष्ट्र और मनु ग्रंथ मिलकर सबको खा जाएगा
जाति धर्म पर खून खराबा होगा अपने देश में।8

हिंदू राष्ट्र बनेगा तो शैतान यहाँ जम जाएगा
कोठी बंगले कार साज सम्मान सभी छीन जाएगा
खानाबदोश बनेंगे सारे अब अपने ही देश में।9

जाति देखकर न्याय व्यवस्था हर आदेश सुनायेगी
सामंतो के क्रूर कहर से मानवता दह लायेगी
राज धर्म हुकमरान घायल कर देंगे देश में।10

लड़ते रहे सदा आपस में क़ीमत तुम्हीं चुकाओगे
रूखी-सूखी मिलेगी रोटी दर दर ठोकर खाओगे
गुलाम स्वत: ही बन जाओगे खुद अपने ही देश में।11

गर अस्तित्व बचाना है तो एक मंच पर आ जाओ
जुल्मी अत्याचारी से एक साथ मिल टकराओ
विजय मंत्र का सार छिपा है भीम राव सन्देश में।12

देश को मजबूत बनाओ

कुछ आधुनिक समाज सुधारकों ने
आजादी के स्वर्णिम महोत्सव काल में
सनातनी हिंदुओं को जगाया
गैर सनातनी हिंदुओं के
खिलाफ भड़काया स
गैर सनातनी हिंदुओं की दुकानों से
कुछ भी मत खरीदो
आयात - निर्यात की
ए, बी सी, डी, भी मत कुरेदो स
चिंतन मनन करने के बाद
बात मन को भा गई
सारी खघ्रीद दारी
सनातनी हिंदुओं से ही करूँगा स
अपने खून पसीने की कमाई
सनातनी हिंदुओं की
दुकानों में ही भरूँगा स
यही सोच कर
बाजार की ओर चला
चौराहे पर
अब्दुल हज्जाम की दुकान ने छला स
दूर दूर तक
शर्मा, वर्मा, गुप्ता चतुर्वेदी
किसी भी सनातनी हिंदू की
नाई की दुकान
नजर नहीं आई ।
अब हजामत कहाँ बनवा ऊँ ?
सोच बाजार घूम आऊँ
फलों के बाजार में
और सब्जी मंडी में
कादिर, रहमान, अहसान अली आदि
चिल्ला रहे थे
सब्जी और फलों की
खूबियों का ढोल पीट
जबर्दस्ती बेच रहे थे स
कोई भी सनातनी हिंदू
नजर नहीं आ रहा था
तेज आवाज में केवल
गैर सनातनी ही
चिल्ला रहा था।
मेरा सिर चकरा रहा था ।
दूसरी ओर बढ़ई की दुकान में
अल्लाह मेहर
सोफे और कुर्सियों पर
रन्दा लगा रहा था
आगे मोटर कार बस ट्रक
ट्रैक्टर के बॉडी मेकर
रफीक, शरीफ, मुस्ताक
इनको नव आकार देकर
चमका रहे थे
जाने माने मिस्त्री अलादीन
वर्षों से बिगड़ी मशीन
सुधार रहे थे
हजरत अली
ठोक पीट कर रहे थे
दूसरी ओर जाफर अली
बैल्डिंग कर
बॉडी को मजबूती दे रहे थे ।
सामने की दुकान में
नसीर खाँ
कोट, पेन्ट, जैकेट, अचकन के
नामी ग्रामी टेलर मास्टर
गले में इंच टेप, हाथ में कैंची
कच कच करती, कपड़े कटर स
साइकिल से लेकर कार, स्कूटर
बस, ट्रक का पहिया
सब में पंचर लगाते मिले
मखघ्मूल भईया स
ए, सी, मोटर हो या कूलर पंखा
मिस्त्री नाजिर दूर कर रहे थे
इनकी गड़बड़ी, सारी शंका स
इनके ही नाम का
पूरे बाजार में
बज रहा था डंका स
सभी मैकेनिकल, दस्तकारी
दुकानों पर घूमा
बाजार का कोना कोना चूमा
पर कहीं भी
सनातनी हिंदुओं की
शर्मा , वर्मा, राजपूतों की
दस्तकारी की दुकान
नजर नहीं आई
यहाँ तक की रिक्शा भी
असलम की नजर आई स
माना ये सारे कामगार
सनातनी हिंदू नहीं हैं
पर इनका राष्ट्रीय योगदान
किसी सनातनी हिंदू से
कम भी नहीं है स
जात पात, धर्म- भेद भाव
मन से ठुकरा ओ
सब से खरीदो सामान
मत करो भूल कर भी
किसी का अपमान
सभी को दिल से अपनाओ
समाज के साथ साथ
देश को भी
मजबूत बनाओ